02-01-1963 प्रातः मुरली ओम् शान्ति “बापदादा” मधुबन

गीत : “आने वाले कल की तुम तस्वीर हो नाज़ करेगी दुनिया तुम पर दुनिया की तकदीर हो .. “

ओम शांति | ये किस के लिय किस की महीमा है ? तुम बच्चों की | क्यों? यह चांद सितरे यह ज़मिन और आसमान इन सब के ऊपर इस समय में झगडा है | ज़मीन के ऊपर भी झगडा है और यह आसमान है उसके ऊपर भी झगडा है | है ना बच्ची | हमरे स्पेस आसमान में कोई का भी एयरोप्लेन डाले, हमरे ज़मीन(बॉर्डर) पर के हद में कोई भी आवे |

तो अभी यह गीत बनाया गया हुआ है | बाप समझाते है बच्चो को अब यह गाए जाते है “तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो..” तो सब थोड़ी समझा जाता है | नहीं | बाप बैठ समझाते है बच्चों को हाँ बरोबर तुम्हारा बाप भी है, तुम्हारा माँ भी है क्यों की कहते है “ तुम मात पिता हम बालक तेरे तुम्हारी किरपा से सुख घनेरे ”, फिर बंधू भी है, सखा भी है | फिर बाबा कहते है सिर्फ मै यह थोड़ी हू यह तो ठीक है तुम्हारा स्पिरिचुअल फादर हू यानि रूहानी बाप हू | अच्छा रूहानी बाप तो रहते ही है वहा | मै तुम्हारा रूहानी बाप अब इस शरीर में आया हुआ हू | तुम जानते हो अच्छी तरह से बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है यानि परमधाम का रहने वाला परमपिता, परम टीचर, परम गुरु उसको कहा जाता है सतगुरु | यह तो तुम जानते हो अच्छी तरह से | फिर कहते है मै निराकार वॉशरमैन भी हू, धोबी | गाया हुआ है “मूत पतीली कपड धो” यानि पतित को पावन करने वाला यानि इनका कपड़ा बिलकुल मेला है - ज्ञान सोप से बिलकुल ही उजवल बनाने वाला , धोबी का काम भी हुआ | फिर बोलते है मै तुम्हारा निराकार सुनार भी हू- ह्यूमन सुनार हू | हू तो निराकार पर ह्यूमन शरीर में आ कर के कहना पड़ेंगे क्यों की यह तुम्हारी आत्मा बहुत अपवित्र हो गई है उसमे एलाय मील गई है(मिक्सचर) – फ़ीट भी कहा जाता है, फ़ीट पड़ने से तुम्हारी आत्मा काली हो गई है बिल्कुल और तुम्हारा शरीर भी काला हो गया है | अब तुम सब को बेहद की भट्टी सुनारों की है हद की भट्टी तुम्हारी है बेहद की भट्टी | जितनी भी आत्माये है उन सब को भट्टी में दाल देता हू योग और ज्ञान की भट्टी में और तुमको बिल्कुल ही प्योर सोना बना देता हू | उसको कहा जाता है गोल्डन ऐज और इसको कहा जाता है आयरन ऐज, कॉपर ऐज ऐसे कहा जाता है ना | तुम सब को योग और ज्ञान की भट्टी में दाल कर के बिल्कुल ही तुम्हारी आत्मा भी प्योर तो तुम्हारा शरीर भी प्योर | परन्तु कौन है यह ? ईन्कोर्पोरिअल ह्यूमन क्यों की हो तुम भी इन्कोर्पोरिअल यानि निराकारी बच्चे परन्तु ह्यूमैनिटी में आये हो | तो अब बाप बैठ कर के सब बात समझाते है बच्चों को मेरे लाडले बच्चों गोड फादर को रचता भी कहा जाता है | क्या रचता है ? कब रचता है ? क्या एकदम नई सृष्टि रचता है? नहीं | क्यों की यहाँ आ कर भट्टी में धारणा है ना बच्ची क्यों की सुनार का काम करना है, धोबी का काम करना है तो यहाँ आना पड़ेगा ऐसे ही समय में जब की मनुष्य सभी पतित है सब पतित तभी आना पड़ेगा ना क्यों की सब को ही प्योर बनाना है क्यों की वहा कोई भी आत्मा बिगर प्योर बने तो रह नहीं सकती है | वहा सिर्फ प्योर आते है एकदम स्तोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में चकर लगाना पड़ता है | तो बाप बैठ कर के समझाते है बच्चो को अच्छी तरह से एक तो समझाया की तुम्हारा क्या क्या हू और केसे केसे तुमको भट्टी में भी डालता हू, तुम्हारे कपड भी स्वच्छ करता हू | यह बाप कहते है ना खुद ऐसे कहेंगे ना मै तुम्हारा फलना हू, तुम्हारा फलाना हू कभी ऐसे कोई मनुष्य कह सकेगा बच्ची ? अगर यह छोटेपन से ही भगवान का अवतार होता तो छोटेपन से ही बता पाता ना, बच्ची यह भी ऐसे ही था “मूत पलीती कपड” ऐसे तो नहीं कहेंगे मूत पलीती कोई भारत में स्वर्ग में थे | बिलकुल नहीं कहेंगे | तुम गाते हो उनको सर्वगुण सम्पन, सम्पन निर्विकारी, स्वच्छ और यह मलिछ | बाप बैठ समझाते है बच्चो को यह भी मालूम हुआ की बरोबर बाबा आ कर समझाते है | कब आते है ? आते है ज़रूर जब उनको स्वर्ग बनाना है तो ज़रूर नर्क में ही आना पड़े | तो अनेक धर्म है बहुत | देवी देवता धर्म तो है नहीं तो जो कहा जाता है की ह्यूमैनिटी का बाप क्रेअटर है | क्रेअटर तो है ह्यूमैनिटी का ज़रूर पर केसे? कोई जानता थोड़ी है | बच्चे भी पड़ते है ना की तुमको किस ने पैदा किया तो कहते है अल्लाह ने पैदा किया लेकिन पैदा केसे किया राज़ तो बताओ कोई | तो बाप बैठ के राज़ बताते है अभी तुम देखते हो ना केसे पुरानी से पुरानी इतनी सृष्टि है 350 करोड़ उन में से सम्प्लिंग केसे लगाते है नई दुनिया का | बड़ा युक्ति का ज्ञान बुधि में बिठाना है| बड़ी विशाल बुधि चाहिए और फिर योग बल से ... शुधि चाहिए तो योग बल भी ज़रूर चहिये | योग बल भी चहिये, योग में भी रहना चहिये कोई तकलीफ थोड़ी है उठ कर बैठना है तुम अपने को आत्मा तो मानते ही हो| तुम खुद कहते हो की आत्मा एक शरीर छोड़ कर के दूसरा शरीर लेती है | ऐसे कभी नहीं कहेंगे की परमात्मा एक शरीर छोड़ कर के दूसरा शरीर लेते है | कभी सुना ? नहीं, आत्मा खुद कहती है मै बरोबर एक शरीर ले कर के फिर दूसरा लेती हू | कर्म अनुसार अच्छे बुरे अनुसार पुनर्जनम लेते है | इसलिए ऐसे कोई कहे ये शरीर परमात्मा के तुकडे है फलाना है पुरज़े है | नहीं | ऐसे कोई होता ही नहीं सभी की आत्माये गाई जाती है की अविनाशी है अर्थात् इम्मोर्टल है| वेसे ही बाप की भी ज़रूर | और फिर जिस्म तो मोर्टल है | अभी आत्माये इम्मोर्टल ज़रूर होनी है क्यों ? क्यों की हर एक आत्मा में नूध है पार्ट बजाने की इसलिए कभी भी विनाश को पा ही नहीं सकती | पार्ट भरा हुआ है ना अगर विनाश हो तो पार्ट सारा मिट ही जाये तो बाप कहते है मुझे फिर बैठ कर के नई आत्माये बनानी पड़े क्या यह ड्रामा फिर नया बने केसे फिर इसलिए कहा जाता है अविनाशी परि देस्तिनेद वर्ल्ड ड्रामा| बहुत आते है कहते है मोक्ष मिले पर यह तो बना

बनाया है ना मोक्ष केसे मिलेगे क्यों की दुःख है ना तब कहते है | मोक्ष मिले मै आऊ ही नहीं | आऊ ही नहीं तब कहते है जब दुःख है | स्वर्ग में कभी कोई नहीं कहेगा की मै आऊ ही नहीं क्यों की दुःख है ना तब कहते है | परन्तु बाप बैठ कर समझाते है बच्चे ड्रामा है अविनाशी और यह चकर लगाता ही रहता है | बाप कहते है मै तुम बच्चो से इम्मोरिअल टाइम्स मिला हू , इम्मोरिअल टाइम्स मिलूँगा ये कभी भी इसका अन्त नहीं आता है | तुम कहते हो कब मिलना शुरू हुआ ? कब केसे कहेंगे इसको कहा जाता है अनादी यह चलता ही रहता है | गाया जाता है “सतयुग आद सत “ तो ज़रूर ये फिरते होंगे ना फिर यह भी तो ज़रूर है ना और तो कोई ड्रामा में और तो कोई धर्म है नहीं जो इनकी नॉलेज देवे | नॉलेज तो यही है सतयुग में डीटी धर्म और फिर त्रेता में शत्रिये धर्म चंद्रवंशी जिस को कहा जाते है फिर वो गायब हो जाते है नाम हिन्दू कह देते है फिर इस्लामिक, बोधी , क्रिस्चियन यहाँ फिर भी सब उनको याद करते है तुम फिर भी वैकुंठ को याद करते हो | क्रिस्चियन लोग क्राइस्ट को याद करते है तो ज़रूर उनको आना पड़ेगा इसलिए ड्रामा तो है ही अविनाशी इसलिए बोल देते है बाप आ कर के बच्चो से इम्मोरिअल टाइम्स मिले है | गोल्डन ऐज टो आयरन ऐज, आयरन ऐज टो गोल्डन ऐज यानि स्वर्ग ते नर्क, नर्क ते स्वर्ग इसके बीच का समाचार पूरा कोई नहीं जानते है इसलिए बाप कहते है मै आ कर के सब समझाता हू | मै तुम्हारा वही बाप हू जिसको तुम याद करते हो और उससे याद भी करते हो | नोलेजफुल है बाबा वो आ कर के हमको नालेज देते है | क्या करने के लिए ? नर से नारायण बनाने के लिए तो टीचर भी तो हो गया ना | बाबा समझाते है अभी ह्यूमैनिटी बाबा ह्यूमन जो है 350 करोड़ फूल है अब नई फिर केसे बनाते है ? पहले पहले मुझे चाहिए ब्राह्मण, है नहीं ब्राह्मण और अगर है तो वो भी जिस्मानी है जिसको कहते है कुखवंशावली | मुखवंशावली गाया जाता है ना क्यों की ब्राह्मण है ब्राह्मण की महीमा करते है “ब्रह्म देवी देवताये नमः “ | ब्रह्मलोक फिर गाते है तो कौन से है वो ब्राह्मण देवी ? तुम खुद कहते हो हम ब्रह्मा के मुखवंशावली पूछेंगे ना ब्राह्मण से ब्रह्मा की संतान परन्तु फिर वो कौन से संतान है ब्रह्मा का जिसकी तुम महीमा करते हो “ब्रह्मण देवी देवताये नमः..” | तो बाबा ने समझाया है की यह ब्राह्मण ऊचे है ना उन ब्राह्मणों से यह सब बाते थोड़ी जानते है कही शास्त्रों में थोड़ी लिखा हुआ है कही गीता में थोड़ी लिखा हुआ है | यह महीमा करते है आवाज़ निकल आते है | इन में से मै सम्प्लिंग लगाता हू, नई हुई ना ये चोटी यह ब्राह्मण तो पहले पहले परमपिता क्या करते है ? आ कर सम्प्लिंग लगाते है ऐसे नहीं है की कोई नई सृष्टि रचता है | नहीं | ये तो रची हुई है सृष्टि | तुम जानते हो हम स्वर्ग देख रहे है | हम स्वर्ग में जा कर देवता बनेगे | इसको कहा जाता है संगम युग की सृष्टि जिसका किसी को पाता नहीं की संगम युग में ब्राह्मण है क्या | पांडव लिखे हुए है बाकी ब्राह्मण लिखे हुए नहीं है | पांडवो का मालूम है बरोबर पांडवो ने ही विजय पाई जय जय कार हो गया था | यादव और कौरव ख़तम हो गए और पांडवो ने जय जय कार पाई | गाया भी जाता है देवताओ और असुरो की लड़ाई | अभी बाप कहते है ना यह है आसुरी सम्प्रदाये | यहाँ देवता केसे आ कर के लड़ाई करेंगे ? यह हो सकता है बच्ची ? नहीं, यह लड़ाई कोई नहीं है | बाबा कहते है तुम बच्चो को माया से लड़ना है और स्वर्ग का मालिक बनना है | बाबा बैठ कर के राज़ समझाते है कहते है की मै ब्रह्मा के मुख कमल तो मनुष्य टहरा ना बच्ची | यह थोड़ी है की विष्णु के नाभी कमल से निकली | कहा विष्णु कहा यह प्रजापिता ब्रह्मा हाथ भी वहा तो नहीं दे सकते ना | वहा मनुष्य नहीं है ना | मनुष्यों को सुनाते है ना | यहाँ बैठ कर के तुमको सभी वेदों ग्रंथो का सार सुनाता हू जो पास्ट हो गयी है तो ज़रूर जो पास्ट हो गयी है और अब बैठ कर के समझाते है | सतयुग में तो नहीं समझेंगे ना बच्ची | इस संगम युग में बैठ कर समझाते है | अभी देखा ब्राह्मण सब से ऊचे हो गये ब्राह्मण रचना | इसको कहा जाता है नई संगम युग की रचना | यह किसी को मालूम नहीं है ब्राह्मणों का | ब्राह्मणों से फिर देवी देवता फिर देवी देवता से शत्रिय बनेगे | वृद्धि को पाते रहेगे | क्या होगा अभी सब खलास हो जाएगा विनाश हो जाएगा तो सतयुग में सिर्फ देवी देवता ही होंगे | उनको पिछाड़ी आना है नंबरवार सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी फिर शुद्रवंशी | इनको सबको म्लितप्लिकेशन होते जाना है क्यों सतोप्रधन, सतो, रजो, तमो होना पड़ता है ना बच्ची | तो बाबा बैठ कर समझाते है | समझा ? सृष्टि बाप आ कर के उनको क्यों क्रिएटर कहते है ह्यूमैनिटी का केसे रचते है ? कोई भी नहीं बताएगे | यह बैठ कर के बताते है देखा मै केसे रचता हू क्या तुम्हारा बन कर आता हू बाप भी तो टीचर भी | तो दादा वादा सब ही बताते है और फिर धर्मराज भी देखो तो सुनार, धर्मराज जो भी तुम कहो इनको सभी यह ऐट्रिब्यूट्स इनको देते है | अभी यह ऐट्रिब्यूट्स फिर लक्ष्मी नारायण को देंगे क्या, राधे कृष्ण को देंगे कोई ? नहीं वह तो बनते है | उनको किसने बनाया ऐसा किस ने बनाया लक्ष्मी नारायण को या भारत को | ज़रूर कोई तो बनाने वाला होगा |कोई मनुष्य तो नहीं बना सकते ना मनुष्य सभी तमोप्रधान अवस्था को पाए हुए है जड्जडी भूत अवस्था को पाए हुए है | तो अभी तुम बच्चे जानते हो की बरोबर बाप यह पुरानी सृष्टि को नई केसे बनाते है | क्यों की आएगे तो पुरानी सृष्टि में ना बाप क्रिएटर ठहरा तो नई सृष्टि बनाये ज़रूर पुरानी सृष्टि में आना पड़े ना तो पुरानी सृष्टि में बैठ कर के खुद बताये की यह पुरानी सृष्टि है | अभी सारी बेहद की बाते है यहाँ बेहद का धोभी, बेहद का सोना, बेहद का सुख सबको बेहद का सुख | बाबा कहते है ना अल्पकाल का सुख कहा जाता है कांगविष्ठा समान सुख बरोबर है ना तब तो सन्यासी छोड़ जाते है ना क्यों की समझते है इसमें सुख नहीं है उनका भी ड्रामा में यह पार्ट है बच्ची | बाप कहते है अभी तो तुम जानते हो ना बच्ची इतना बड़ा सुख है वो थोड़ी फिर कहेंगे कुछ की हमको यहाँ नहीं आना है मुझे मोक्ष चाहिए | मोक्ष भी मांगते है | यहाँ सद्गति भी मांगते है | किस से ? बाप से | तो

कोई दे ना सके बच्ची यह गुरु लोग तो बहुत चले आये है ना | बच्ची सतयुग में कोई गुरु होता ही नहीं है क्यों की सदगति है ना तो फिर गुरु क्या करेगा | देखो गुरु बहुत बन गए है गुरु कितने बड़े बड़े दुःख मंतर बनाते है सत्य ऋषि यह बहुत ऋषि मुनियों का बनाते है | गुरु बन कर के उन्होंने भारत का कोई उधार किया क्या ? उधार होना है तो बेहद का उधार होना है ना | एक दो वापिस जा नहीं सकते बाबा कहते है वापिस थोड़ी कोई जा सकते है- नहीं | वापिस जा नहीं सकते कोई | सब का पार्ट जब पूरा हो जाता है सभी तमोप्रधान बन जाते है तब मै आता हू गाइड बन कर के और गाइड लिब्रेटर एक है, पीस मेकर भी एक है समझा ना | प्रोस्पेरिटी मेकर भी एक है | कंगाल है ना इनको इतना प्रोस्पर कौन करेगा किसी में ताकत थोड़ी ना रहती है | देखो सब को प्योर भी वही करते है पीस में भी वही ले के आते है क्यों की सतयुग में फिर पीस भी तो है ना | लड़ाई झगडा मारा मारी नहीं है क्यों ? क्यों की बाप के बच्चे बन गए ना तुमको बचा रहे है अभी तुम जानते हो हमारा बाबा कौन है | अभी ऐसे मनुष्यों की थोड़ी होती है महीमा | टीचर, बाप, सुनार सभी बैठ कर के प्रैक्टिकल में समझाते है की केसे केसे मै बेहद का धोबी हू, बेहद का सुनार हू, बेहद का गुरु हू , बेहद का सुख देने वाला हू, बेहद की पवित्रता, शांति और सुख देने वाला हू | जेसे पहले दिया था अब फिर से दे रहा हू | जन्म भी मेरा भारत में है परमपिता परमात्मा का जन्म | देखो जहा जहा जिस जिस धर्म सथापक वाले का जन्म होते है ना वह यात्रा बन जाती है वही यात्रा बनेगी ना | ऐसे तो नहीं है मरेंगे यात्रा बनेगी | यात्रा बनती है क्यों की आते है धर्म स्थापन करते है ना तो उनकी देखो यात्रा हो जाती है तो यह यात्रा भारत की गीता को खंडन करते हो ना तो यह है ड्रामा | तो बाप समझाएगा तो ज़रूर ना की यह क्यों हुआ क्या कारण बना | बाबा कहते है अगर गीता में शिव बाबा का नाम देते तो समझ में आता की यह बाप है जो हमको दुःख से आ कर के छुडाते है वही है जो हमको मुक्ति देते है | मुक्ति देते है किस से ? लिबरेट कोई चीज़ से कराना होता है ना ? वह है दुखों से | दुःख कौन देते है ? यह रावण रूपी 5 विकार जो दुःख देते है | तो उनको कहा जाता है लिब्रेटर | तो देखो प्यूरिटी मेकर, पीस मेकर, प्रोस्पेरिटी मेकर | अभी बन रहे है ना प्रैक्टिकल में | बरोबर सतयुग में प्यूरिटी भी है, पीस भी है, प्रोस्पेरिटी भी है | अब तीनो ही नहीं है नों प्यूरिटी, नों पीस, नों प्रोस्पेरिटी | क्यों? फिर ये किस का राज है ? फिर यह भारत में राम रावण की कहानी सुनाते है | तो बरोबर बच्ची जो रावण है लंका का और हनुमान और सीता यह क्या है यह पुस्तक हुआ बच्ची | इसको क्या कहे यह तो नावेल से भी नुकसान कारक है क्यों की नावेल तो मनुष्य पड़ते है एक जन्म में फिर दुसरे जन्म में पढ़े या ना पढ़े पर यह तो हम लोग गीता और धर्म शास्त्र जेसे क्रिस्चियन लोग है तो बाइबिल को तो मानते आते है ना | अभी वो लोग तो इररिलिजिस नहीं बने है ना | भारत इररिलिजिस बन गया है क्यों की हमारा कोई धर्म है ही नहीं बिल्कुल ही | क्या अंग्रेजी में कहते है ? सेक्युलर स्टेट यानि हमारा कोई धर्म नहीं है | कहते है रिलिजन इस माइट | गॉड इस रिलिजन एंड रिलिजन इस माइट | क्यों कहते है उनको ? वही धर्म स्थापन करने के लिए ताकत दे देते है ना | उस समय ताकत रहती है ना आत्मा में बहुत पीछे वो ताकत गुम हो जाती है | अभी हमारी ताकत कुछ नहीं रही बिल्कुल अन्जारा हो गयी है | फिर अब बाबा ताकत देते है जिसका नाम देते है शिव शक्ति सेना | शिव बैठ कर के उनको शक्ति देते है | फिर पांडव सेना भी | शिव की शक्ति माताऐ भी, शिव की शक्ति फिर पांडव सेना भी | दोनों का हुबहू मंदिर अब में है | शिव शक्ति की भी सेना है फिर पांडव की भी सेना है यादगार तो चाहिए ना सबका बच्ची | यादगार तो रहते है ना| देखो गाँधी जी भी गये तो उनके यादगार तो है ना सब आ कर पूजते रहते है परन्तु मालूम तो दुनिया को नहीं है ना की मुक्ति वा जीवनमुक्ति , मुक्ति कहा जाता है हम जा कर के मुक्ति धाम में बैठते है | लिबरेट सबको करते है तो कोई जानते नहीं है ना बच्ची तो सिर्फ यह भारतवासी भले ही दूसरी जगह में भी है शिव के लिंग परन्तु ऑक्यूपेशन किसी को भी पाता नहीं है | अभी ऑक्यूपेशन तो आ कर बाप बताये ना | फादर सोज़ सन, टीचर सोज़ स्टूडेंट ऐसे कहा जाता है ना | तो ऐसे है जब प्रैक्टिकल में तुम क्या समझने आये हो ? जाओ बच्चो के पास वो सुख देगा फ़ादर का अच्छा कुछ सिखने का है जाओ स्टूडेंट के पास तुमको सब सिखालेंगे आते है ना | क्या आश रख कर के आते हो तो मालूम तो होना चहिये ना | हम फलानी आश रख कर के आये है पूछा जाता है ना अगर कोई आये , आओ बच्चे केसे आना हुआ ? किस चीज़ की दरकार है ? तो देखो सन्यासियों के पास जाएँगे तो वो समझते है की हमको शांति मिलेगी सुख नहीं मिलेगा | क्यों ? क्यों की वो सुख तो छोड़ देते है ना कहते है कांग विष्टा समान है तो सुख को नहीं मानते है | फिर आएगा शांति , हमको शांति केसे मिले |

अभी एक आता है शान्ति के लिए अच्छा चलो उनको कोई शान्ति देते है पर आत्मा अशान्त किसकी हैं| शान्ति किसको कहा जाता हैं| अशान्ति है घरबार सभी में अशान्त है| लड़ते झगड़ते रहते है| बाकि अगर तुमको शान्ति चाहिए तो फिर वापस जाना पड़े जहा से हम आते हैं| वहा बहुत शान्ति में रहते हैं| जो पिछाड़ी के मठ पंथ वाले होते है उनको देखो कितना 4750 वर्ष तक में 200 कम तो शान्तिधाम में रहते है| फिर उनको यह बताएगे की क्या तुम वहा जाना चाहेते हो क्या इतने दिन? तो उनको पसंद आएगा| कहेंगे इधर भी अच्छा पर हम शान्ति में रहना चाहेते हैं| ऐसे भी कई कहेते हैं| अब यह शान्ति किनको मिलती हैं| ये तो जो पिछाड़ी में आते है उनको मिलती हैं| उनको तो ऑटोमेटिकली मिलती हैं, चाहे ज्ञान लेवे या ना लेवे क्योंकि सब हिसाब किताब चुक्तु कर फिर आयेगे पिछाड़ी में वो जो भी हो| बहुत है जो साइंस को मानने वाले है नाइजर को मानते है फलाने को मानते है टेढ़े को मानते है| तो ये बाते

है बहुत आसान सी| अभी तो बाप ने समझाया सुबह में बच्चे आये तो बोले तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही हो तो बाप बोले नहीं तुम भुलते बहुत हो| हम धर्मराज भी है ना| हम तुम्हरा मूत पलीती कपड धोने वाले हैं| बच्चे बोलते नहीं बस दादा है दादा है| तो वो खुद बैठकर समझाते हैं ना बच्ची कौन यह नहीं फिर वो| क्योकि इसने तो पुनर्जन्म लिया ना बच्ची वो बोलते मै थोड़ी ना पुनर्जन्म लेता हूं तुम्हारे मुआफिक| तुम्हरा यह जो दादा है ना जिसमे मै आया हूं ये 84 जन्म लेते है| यह उनके बहुत जन्म के अन्त का जन्म है| यह पूज्य था सो पुजारी बना| जो तुम नहीं गाते आते हो आपेही पूज्य आपेही पुजारी| तुम तो मुझे कहे देते थे| जब मन्दिर में जाते थे तो उनको भी जाकर कहे देते थे क्योंकि पूज्य है नहीं पर उनको मालुम नहीं है की यह पूजारी बनेगे| यह क्या है किसके लिए कहेते थे| खुद भी कहेते थे आपेही पूज्य आपेही पूजारी| आपेही दादा आपेही पिता फलाना फलाना बहुत कुछ कहते थे| तो अभी बच्चो ने समझा की किसके पास आये हो| यह तो याद रखना चाहिये| यह थोडी ना भुल जाना चाहिए की किसके पास हम आये हैं| बाबा तुमको सोभाग्यशाली बनाते हैं| इस समय में दुर्भाग्यशाली हैं| भारत सोभाग्यशाली है भला? बहुत दुर्भाग्यशाली है जो बिलकुल ही सोभाग्यशाली था| तो बच्चे भारत की बात हुई ना सुख की| वह तो मुक्ति देते है कितना सोभाग्यशाली बनाते हैं| इतना सोभाग्यशाली सिवाय बाप के तो कोई बना ना सके| बेहद का सवाल हो गया ना| हां यह जरुर है सोभाग्यशाली बनने के लिए पुरुषार्थ पूरा चाहिए नम्बरवार| स्वर्ग में जरुर सूर्यवंशी भी हैं चंद्रवंशी भी हैं| तो जरुर कहेगे सबसे सोभाग्यशाली कौन? जरुर सूर्यवंशी होगे सतयुग में क्योंकि गोल्डन जुबली उनको कहा जाता हैं| तो पुरुषार्थ हमको ऐसा करना चाहिए जो हमको गोल्डन जुबली मिल जावे क्योकि स्वर्ग है एक्यूरेट गोल्डन जुबली| द्वापरयुग और कलयुग को हेल कहा जाता है| माया उसको हेल बनाने शुरू कर देती है और यह तो एक ही धक् से स्वर्ग बना देते है आहिस्ते आहिस्ते स्वर्ग बनेगा| स्वर्ग तो माना ही स्वर्ग| तो बच्चो को फिर अच्छी तरह से बाप बैठ समझाते हैं| यह भी कहेते हैं की बहुत समझाना से क्या फायदा कितना सहज भी है समझना परन्तु फिर मन्मनाभाव कह देते हैं| उल्लास तो रखो ना| इसमे तुमको थोड़ी तकलीफ होती हैं| माया तुम्हारी याद घडी घडी भुला देती हैं| माया भुलाकर के कोई ना कोई विक्रम करा देती है| समझा| यह खेल बना हुआ है-अलादिन और जीन का खेल है | अल्लाह ने अव्वल तक मुसाफिर किया | कौन सा ? इसमें अगर थका दिया तो काम खलास हो जायेगा , खेल भी ऐसे बने हुए है परन्तु वो तो बैठकर के ऐसे ही बनाये है| कोई उससे समझ मे थोड़ी ना आता है| तो बाप बैठ कर के सब समझाते हैं| हातमतेई का भी एक नावेल होता हैं| मूलरा डालता था तो माया गुम हो जाती थी मूलरा निकालते थे तो माया आ जाती| मूलरा माना ही योग| अगर मूलरा निकला अर्थात बुद्धि का योग टुटा तो ये लगा माया का गोला| तो बाप तो बच्चो को सब समझाते हैं| बाप को जो ज्ञान का सागर सुख का सागर फलाना फलाना कहते है, फिर तुम मात पिता..... फलाना फलाना धर्मराज तो कितनी महिमा हो गयी यह महिमा कोई कृष्ण की नहीं हैं| खुद आकर के सब समझाते हैं| बच्चे अभी देखा कौन है जिसका आकर के बने हो| यह भी उनका बच्चा बना ना क्योकि यह भी तो वर्सा लेते है ना| वर्सा हमेशा दादे की प्रॉपर्टी पर होता है तो बाबा खुद कहते है ये मेरी प्रॉपर्टी नहीं है, मै भी दादे से प्रॉपर्टी लेता हूं| कौन सी? अविनाशी ज्ञान रत्न से स्वर्ग का मालिक बनने की| तत्तुवं - तुम भी| मम्मा बाबा कहते हो ना तो बच्चो का तो फ़र्ज़ है मम्मा बाबा के गद्दी का वारस बने तो पुरषार्थ ऐसे करना चाहिए| मम्मा बाबा का पुरुषार्थ फॉलो करना पड़े ना| इसको कहा जाता है फॉलो मदर एंड फादर| तो अभी है बेहद की राजधानी लेना| जैसे बाप मुरली चलाते है ये भी तो चलाते हैं| तुम ऐसे समझते हो क्या की केवल बाबा ही मुरली चलाते है यह नहीं चलाते| अरे तो फिर यह पद कैसे पाएगे| मम्मा पद पा जाएगी यह नहीं पाएगे क्या| नहीं| तो दोनों आपस में कभी यह बाबा कभी वो| देखो बाबा कल भी समझा रहे थे एक मेजर को तो बाबा कहते मुझे दो मै समझाता हूं| देखा| बाबा को यह बुलाते है गुप्त तो बिच बिच में वो खुद भी समझा देता हैं| मै तुम्हरा बाप भी हूं दादा भी हूं टीचर भी हूं गुरु भी हूं धर्मराज भी हूं| यह वो कहेते है यह थोड़ी ना कहेगा बच्ची| अब यह तो समझ की बात है ना| बिलकुल क्लियर है एकदम की वह और यह| यह भी तो कुछ कहेते तो रहेगें ना| बुद्धू तो नहीं है ना| तो बाप आकर के हम बच्चो को कितना अच्छा पढ़ाते हैं| कितना गुलगुल बनाते हैं| इसको कहा जाता है रेजुविनेशन| हमारी जो लाइफ है ना उसको फिर रेजुविनएट करते हैं| यहाँ क्या रेजुविनएट कराते| तुमने सुना नहीं था वो प्लास्टिक सर्जन आया था वो बंदर की गिलास (गॉगल्स) निकाल करके इसमें डाली थी और बहुतो ने डाली थी बाबा जानते हैं| तो वो बात थोड़ी है बच्ची| यह तो माया को फिर बैठ कर के प्योर बना करके उसमे ज्ञान भरते है आप समान बाबा बनाते हैं| सिर्फ एक बात है दिव्या दृष्टि की चाबी नहीं दी और ना बादशाही करते हैं| वो खुद बोलते है बच्चे मै बादशाही नहीं करुगा| तुम बच्चे बादशाही लेते हो और गवाते हो माया से| अब जब हम भी लेवे और गवावे तो फिर रजाई देने वाला कौन| इसलिए मेरा पार्ट सबसे न्यारा हैं| तुम जन्म मरण मे आते हो मै नहीं आता हूं| मेरा कोई सूक्षम शरीर भी नहीं है तो सुथुल शरीर भी नहीं है| मेरा पार्ट न्यारा हैं| मै सर्वावियापी नहीं हूं बच्चे| मै सर्वावियापी कुत्ते में बिल्ली में वाह! मुझे और ही तुम धक्का देते हो इसलिए मेरी गलानी करते हो| पहले मेरी गलानी करते हो फिर मेरे बच्चे शंकर की गलानी| शंकर पार्वती पर फ़िदा हुआ फिर वो ब्रह्मा की भी की ब्रह्मा सरस्वती पर फ़िदा हुआ फिर वह जो विष्णु है लक्ष्मी नारायण जो छोटेपन में कृष्ण थे उनको बना दिया सर्वावियापी और गिलानी लगानी शुरू कर दी| यह भी खुद नहीं कहेते यदा यदा ही धर्मसैयः ऐसे समझाते हैं| हिंदी मे समझाते है संस्कृत में नहीं समझाते हैं| नहीं हिंदी में बैठ

कर के समझाते हैं| फिर देखो हिंदी में समझाते है वो गुजराती भी समझ जाते हैं| गुजराती गुजराती में समझाते है पंजाबी पंजाबी में समझाते है इंग्लिश होगी तो इंग्लिश में समझाऐगे| अभी ऐसे तो नहीं है की बाप बैठकर के कोई लैंग्वेजेज सीखनी पड़ी| नहीं | लैंग्वेज इनकी| बाबा कहेते संस्कृत में पढाई नहीं होगा हम कैसे समझेगे| तो बच्चे यह ऐसे हैं| कल्प पहले जैसे समझाया था वैसे ही समझाऊगा| तो समझ लगती जाती हैं| यह बच्चे पंजाबी में भी समझाते है फिर इंग्लिश में भी समझाते हैं| बहुत लैंग्वेजेज है ना| ऐसे थोड़ी ना संस्कृत में सब समझेगे| अच्छा बच्चो को समझाया की नौकरी चाकरी पर जाने का है आधा घंटा बिलकुल खाली है| डोस लेना है| यह बहुत अविनाशी ज्ञान का डोस है| इनसे देखो नशा चढ़ता है| नशा कौन सा - नारायणी नशा| तो गाया जाता है मै सिन्धी में कहेते हूं - नशन शब्द में हैं नुकसान बिगर नशे नर को नारायण| तो हिसाब देखा अभी| हम अभी नर सो नारायण बनते हैं| अभी पढ़ते है तो नशा चढ़ता है बच्चो को हम लक्ष्मी बनेगे| मम्मा लक्ष्मी बन सकती है हम नहीं बनेगे|

बाबा पूछते है कभी अरे बताओ बच्चो मै इसके तन में किस पार्ट मे आता हूं कहा आता हूं | गाया जाता है ना भृकुटी के बिच में चमकता है सितारा| सितारा आत्मा को कहा जाता हैं| तो जरुर उनकी बाजू में आकर के बैठता होगा और कहा बैठेगे| समझा ना| अमृत्वेले सब को कहेगे अमृतवेले आओ क्योंकी अमृतवेला बहुत मशहूर है ज्ञान अमृत भी है| सुबह में फ्रेश रहेते हैं| तुम बच्चे तो फ्रेश ही होगे और तो बिचारे विकार में जाते है तो वो तो बर्तन गन्दा हो गया ना| उनमे यह धारणा नहीं हो सकती| इसके लिए तो बर्तन चाहिए| बहुत अच्छा बर्तन| यह बुद्धि बर्तन है ना| बच्ची बुद्धि को माया ने ताला लगा दिया है| अब उसको कहा जाता है बुद्धिवानो का बुद्धिवान – श्रीमत| वह बहुत अच्छी मत देने वाला हैं तो हुआ न बुद्धिवानो का बुद्धिवान| हम बुद्धिहीन थे| हमारी आत्मा को कहा जाता है अंधे बुद्धिहीन| तो बाबा आकर के ताला भी खोलता है और बुद्धि देखो कितनी देता है| हम कोई कम थोड़ी ना बनते हैं| हम तो अभी कुछ कम नहीं| अभी तो ज्ञान सागर के बच्चे हैं| सब जान गए| सारा झाड का ज्ञान सारा ड्रामा का ज्ञान इसको ही कहा जाता है गॉड फादेर्ली नॉलेज| गॉड फादेर्ली नॉलेज फादर भी कहेते है नॉलेज भी कहेते हैं| फादर कभी बच्चो को पढ़ाते है क्या| भले कोई पढ़ाते हो तो भी लॉ नहीं है ना की उनको स्कूल मे जाना पड़े| तो देखो फादर सब कुछ समझाते है की मै तुम्हरा बाप भी हूं तो टीचर भी हूं तो सतगुरु भी हूं तो धर्मराज भी हूं तो धोबी भी हूं तो फलाना हूं फलाना हूं| यह महिमा कभी भी देवताओ की नही हैं| अभी देखो आज कुछ कमती आये होगे चले गये होगे| अब वो एक्यूरेट वाणी कैसे सुने जो नशा चढ़े| इसको कहा जाता है बिगर नशे नारायण बने| अभी रोज पढ़े तो कितनी पॉइंट्स नई आती है| नहीं आयेगे तो कैसे सुनेगे की बाबा ने क्या समझाया हैं| एक्यूरेट वाणी यह जो बैठ कर के देखते है ना बाबा को के कैसे यह एक्सप्रेशन भी निकलते हैं| तो सन्मुख बहुत अच्छा लगता हैं| परन्तु फिर भी बाबा कहेते हैं सब तो सन्मुख हो नहीं सकते हैं| अब कुछ सुने तो नशा चढ़ेगा| मुरली पढ़े जरुर | कोई पॉइंट निकलेगी तो कोई वक्त कोई को तीर लग जाता है अभी समझाते वह ही हैं तो तीर लग जाता है ना कोई वक्त में नयो को| तो आयेगे तो तीर लगेगा ना| अच्छे अच्छे साधन बाबा ने बनवाए है| यह कोई ग्रामोफ़ोन थोड़े ना था| यह बाबा जब छोटेपन में था तो शमा जलाते थे दुकान में| बिजली नहीं थी| तो देखो यह 100 वर्ष में क्या निकल कर आये हैं| रेडियो टेलीविज़न फलाना फलाना| यहाँ टेलीफोन रखा और फिर सब देख भी सकेगे फिर सुन भी सकेगे| ऐसी ही बहुत झाड जल्दी जल्दी बढ़ता जायेगा| यहाँ जो इतने बैठे है ना वह फिर 1 से 2 बनेगे 2 से 4 4 से 8 ऐसे ही झाड़ बढ़ता है ना तो इस झाड को समझना है अच्छी तरह से जो बाबा ने बनवाया हैं| और तो कोई जानते ही नहीं है इस झाड़ को| बाबा भी नहीं जानते थे इस झाड़ और ड्रामा को| जिन्होंने कल्प पहले समझा होगा वह ही समझेगे| जो होगे ही नहीं देवी देवता धर्म के वह क्या समझेगे क्योंकि सैंपलिंग लग रही है फिर से देवी देवता धर्म की जो हिन्दू कहलाते है और कन्वर्ट हो गए हैं| देखो एक आंबेडकर आया था वो एक ही भाषण से पूना लाख सुनते ही बुद्धि बन गये| अरे कहा हमारा कुल भूषण देवी देवता धर्म वाले और फिर देखो उस धर्म में चले गये| क्रिस्टियन धर्म में चले गये फलाने धर्म में फलाने धर्म में कन्वर्ट हो गये| कितना उच्च कुल है हमारा| अभी तुम आये हो इश्वर के घर में जहां दादा है बाबा है| तुम ऐसे कहेगे हां हमारा दादा जो है ना परमपिता परमात्मा वह भी यहाँ है| फिर ब्रह्मा बाबा यह है उच्च ते उच्च और देखो रहेते कैसे है | आहिस्ते आहिस्ते बढ़ने लगेंगे| भीड़ होती जाएगी जैसे उन्हों की होती हैं| बाहार जाते है तो और लाखो आए| कोई मरा तो लाखो आए कोई बाहर से आए तो लाखो आये | कितने देखते है और फिर देखो तुम बच्चो को वो थोड़ी ना प्यारा लगेगा जीसस क्राइस्ट आये| भुल गये है की बाप जब आते है तब क्या होता होगा| तो पिछाड़ी में कहेते है ना –अहो! बाबा तुम्हारी गत मत तुम ही जानो| गति और सत्गति करने की मत बहुत ही न्यारी है| कलयुग वाले किसी की गति नहीं करते हैं| अभी सुना बच्चो ने अच्छी तरह से| बाप की तो कोई महिमा बताओ जिसके पास आते हो सुनने को| सिख भी गाते है ना मूत पलीती कपड धोये मनुष्य से देवता किये..... किसकी महिमा है? एक ॐकार सतनाम कर्तापुरख ....अजुनिसैभम महिमा करते है ना | उनके पास दो चीज़े बहुत अच्छी है -जप साहेब और सुखमनी| साहेब को जपो तो तुमको सुख मिलेगा| बाबा का पढ़ा हुआ है बहुत| जप और फिर है सुखमनी| जप साहेब को साहेब तो सच्चा है ना तो सुख मिले| अभी तुम प्रैक्टिकल में याद करते हो सचखंड की स्थापना करने वाले को और तुमको सुख अथाह मिलते हैं| अब जप साहेब सुखमनी किसकी याद में? वह समझते नहीं हैं| जबकि बाप आकर के तुमको समझाते हैं| अक्षर बिल्कुल ठीक है जप साहेब| बाप को जपो तो सुख मिले| तो बाबा भी कहेते

है ना बच्चे मन्मनाभाव| बाबा कहेते है ओ मेरे मेरे लाल प्राणों से प्यारे लाल क्योंकी जिस्मानी संबंध तो है नहीं| वह तो है नहीं किसी को क्योंकि छोड़ दिया ना| वह माया की तरफ हम इश्वर की तरफ| हमारी इश्वर की तरफ लगन लग जावे तो हम क्या करे उनको| तो मै इसलिए कहेता हूं आओ मेरे लाल मेरे प्राणों के प्यारे लाल| कितना प्यार करते हैं ना बच्चो को तो बरोबर हैं तो उनके बच्चे ना| रूहानी जिनको कहा जाता है स्पिरिचुअल रूहानी बच्चे| कितना प्यार से बैठ करके गुलगुल बनाते हैं| ऐसा कोई बाप कभी देखा हैं| लोकिक में अगर कोई को 6-7 बच्चे होगे और कोई बेरिस्टर होगा कोई इंजनिअर तो कहेगे वाह वाह बच्चे| ये भी तो बच्चे ऐसे है ना| अरे यहाँ तो बाप पढ़ा कर सूर्यवंशी बनाते हैं 21 जन्मो के लिए| ऐसा बाप कभी देखा |

अच्छा मीठे मीठे सिकीलदे बच्चो प्रति मात पिता बापदादा का याद प्यार और नमस्ते | रूहानी बाप की रूहानी बच्चो को नमस्ते|